

शक्दों का व्यार्थक समूह वाक्य मुहलाला है, उत्थाल जव दो या दो से आहाम शब्द मिसरे हैं और रेरे अर्थ का जाह्य कराल है, वाक्य कहमाला है। पैसे- केव्या भेंसुरी बजाता है। राष्ट्रमा गाना गारी है। विश्रोप - भावार्घ के झाधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई वाक्य होता है।



भिन्न भिन्नः-भिन्न प्रयोग/रचना के आधार पर शिन्न अधिक के काशार पर



1) प्रयोग रचना के आधार पर वाक्य के भेद:-2) > अ<u>न</u>युक्त वाक्य 3> मिश्र वाच्य



क्रिय के अंग- दो कि उद्देश्य कि किथ

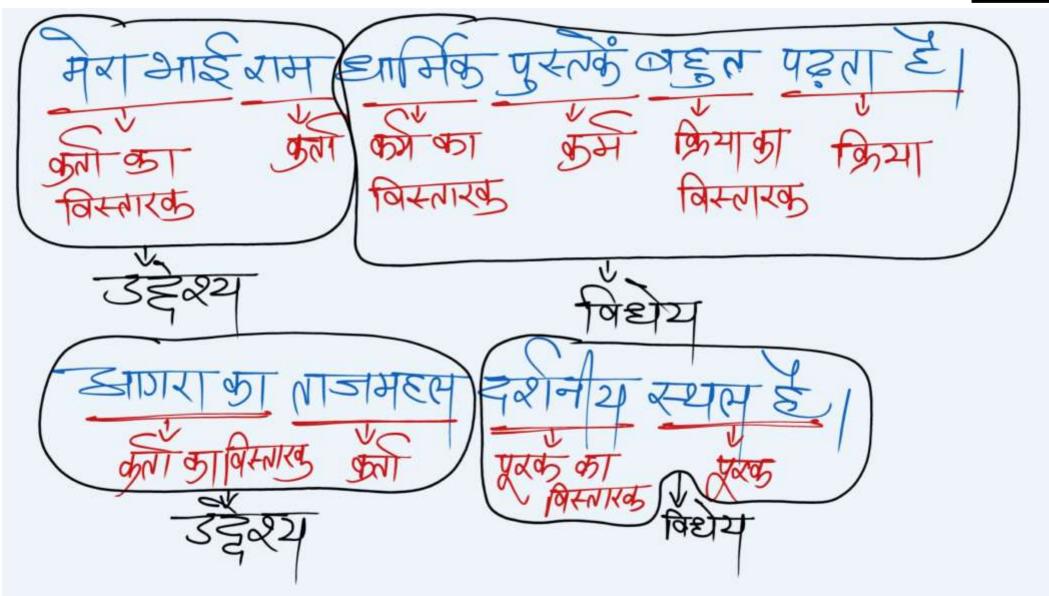


जिसके द्वारा कुटक कुटा किया जागार्ट, उसे उट्टिश्य कहते हैं, अधीत् कर्ती, कर्ताका विस्ताल



श्री विद्याय- कृती और कृती के विस्तारक के डारा जो कुटा कुटा किया जाला है, उसे विद्येय कुटले हैं, अर्थात क्रिया, क्रिया का विस्तारक, कर्म, कर्म का विस्तारक, पूरक और प्रच का विस्तारक विधेय कुल्याता है।







प्रयोग /रचना के आधार पर वाक्य- भीन भेद

अब किसी वाक्य में एक उद्देश्य और

रक विद्येय हो, प्रावावय रक ही प्रवाह में आसानी ने वोल निया जार, सरम्बाक्य कुहमाला है।

जिसे- अमित फुटबॉम खेलला है। मोनिका गामा गार्त है। उद्देश्य विद्येप



हवा का लीव झोंका सबकुहर उड़ा भे गया। रोगी को दवा पीते ही उत्टी हो गई। पिलाजी के स्रेशन पहुँचेते ही गाड़ी ह्यूर गई। अमित के विद्यामय पहुँचते ही झेरी अज गई।



मा औरनीमा गाना सुन, गा और सुन रिश्च अपने भाई के साथ विदेश धूमने जा रहा शिरिका अपनी माँ के साथ निहाल जा रही है।